



Hargharpanditji

॥ श्री वरूथिनी एकादशी व्रत कथा ॥

॥ ॐ नमो नारायणाय ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री वरूथिनी एकादशी व्रत कथा ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्री लक्ष्मीनारायणाय नमः॥

वरूथिनी एकादशी का परिचय

वैशाख मास के कृष्ण पक्ष में आने वाली एकादशी को वरूथिनी एकादशी कहा जाता है। "वरूथिनी" का अर्थ है रक्षा करने वाली। यह एकादशी भगवान श्री विष्णु को अत्यंत प्रिय मानी गई है। पद्म पुराण और भविष्य पुराण में इसकी महिमा का वर्णन मिलता है। ऐसा माना जाता है कि इस व्रत के प्रभाव से मनुष्य पापों से मुक्त होकर सुख, सौभाग्य और आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त करता है।

युधिष्ठिर का प्रश्न

एक बार धर्मराज युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा—

"हे जनार्दन! वैशाख मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का क्या नाम है?

उसका महात्म्य और व्रत का फल कृपया बताइए।"

भगवान श्रीकृष्ण ने उत्तर दिया—

"हे राजन्! यह वरूथिनी एकादशी है। यह महान पुण्यदायिनी, पापों का नाश करने वाली तथा भक्तों की रक्षा करने वाली है। इसका व्रत करने से मनुष्य इस लोक में सुख और परलोक में उत्तम गति प्राप्त करता है।"

राजा मान्धाता की कथा

प्राचीन समय में सूर्यवंश में राजा मान्धाता नामक एक अत्यंत धर्मात्मा, सत्यवादी और प्रजावत्सल राजा राज्य करते थे। वे भगवान श्री विष्णु के अनन्य भक्त थे और समय-समय पर तप, दान तथा यज्ञ करते रहते थे। एक दिन राजा वन में तपस्या कर रहे थे। उसी समय एक भयंकर भालू वहाँ आया और उसने राजा के पैर को पकड़कर उन्हें घायल कर दिया।

राजा ने भगवान श्रीहरि का स्मरण किया और पूर्ण श्रद्धा से उनकी शरण ली।

भगवान श्री विष्णु ने तत्काल अपने सुदर्शन चक्र से भालू का नाश किया और राजा की रक्षा की। यद्यपि राजा का अंग घायल हो गया था, फिर भी भगवान की कृपा से उनका जीवन सुरक्षित रहा।

भगवान श्रीहरि ने राजा से कहा—

"हे राजन्! तुम वैशाख कृष्ण पक्ष की वरूथिनी एकादशी का श्रद्धापूर्वक व्रत करो। इसके प्रभाव से तुम्हारे सभी पाप नष्ट होंगे, शरीर की पीड़ा दूर होगी और तुम्हें पुनः पूर्ण सुख एवं वैभव प्राप्त होगा।"

राजा मान्धाता ने विधिपूर्वक वरूथिनी एकादशी का व्रत किया। भगवान श्रीविष्णु की कृपा से उनका स्वास्थ्य सुधर गया, उनका राज्य पहले से अधिक समृद्ध हुआ और अंत में उन्हें परम गति प्राप्त हुई।

भगवान श्रीकृष्ण का उपदेश

भगवान श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा—

जो मनुष्य श्रद्धा और नियमपूर्वक वरूथिनी एकादशी का व्रत करता है, वह पापों से मुक्त होता है।

यह व्रत सौभाग्य, आरोग्य, धन और यश प्रदान करने वाला है।

इस व्रत का पुण्य अनेक यज्ञों, दानों और तपों के समान बताया गया है। भगवान श्री विष्णु की कृपा से भक्त के जीवन की बाधाएँ दूर होती हैं और उसे अंत में मोक्ष की प्राप्ति होती है।

वरूथिनी एकादशी का संदेश

वरूथिनी एकादशी हमें यह शिक्षा देती है कि जीवन में चाहे कितनी भी कठिन परिस्थितियाँ क्यों न आएँ, यदि मनुष्य भगवान श्रीविष्णु में अटूट श्रद्धा रखे, धर्म का पालन करे और संयमपूर्वक व्रत करे, तो उसे ईश्वर की रक्षा और कृपा अवश्य प्राप्त होती है। यह व्रत केवल बाहरी संकटों से ही

नहीं, बल्कि अहंकार, लोभ, क्रोध और मोह जैसे आंतरिक दोषों से भी रक्षा करने की प्रेरणा देता है।

व्रत का फल

शास्त्रों के अनुसार वरूथिनी एकादशी का व्रत करने से—

समस्त पापों का क्षय होता है।

सौभाग्य और समृद्धि की प्राप्ति होती है।

जीवन की बाधाएँ दूर होती हैं।

भगवान श्रीविष्णु की कृपा प्राप्त होती है।

अंत में मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है।

॥ श्री वरूथिनी एकादशी व्रत कथा सम्पूर्ण ॥

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"